

गोण्डवाना क्रम (GONDWANA)

→ परिचय — प्रायद्वीपीय भारत में कार्बोनिफेरस काल में हार्सिनियन भू-संरचना से कनी प्रशित द्रोणियों में अन्तिम कार्बोनिफेरस से जुरैसिक काल के निम्न क्रिटेशस तक गोण्डवाना संस्तरी का निर्माण हुआ।

सर्वप्रथम 1872 में एच. वी. मेडलीगट ने मैसाचुसेट्स के द० में गोण्ड राज्य एवं गोण्ड जमाति के नाम पर इस क्रम को गोण्डवाना कहा।

→ जलवायु-परिवर्तन एवं जीव-विकासधियाँ → सबसे नीचे तालचौर सिरीज के बाइबुलर, हरे शैल से स्पष्ट है कि इस काल के प्रारंभ में कार्बोनिफेरस हिमकाल था। दामुदा काल में जलवायु उष्णार्द्ध हो गई और वनस्पति (ग्लोसोपेट्रिस) तथा कोयला-पत्तों का विकास हुआ। उपरी दामुदा काल में जलवायु शुष्क हो गई जो कामठी बालुपत्थर में लाल लोहमय भाग से स्पष्ट है। पंचोत्र-महादेव काल में जलवायु ठंडी-शुष्क हो गई जो पंचोत्र सिरीज के हरे बालुपत्थर एवं इसमें अविद्युत फ्लुसपाट से स्पष्ट है। इस काल में ग्लोसोपेट्रिस का विनाश हो गया पर डाइप्लोडिग्रम वनस्पति थी। इस काल के लाल बालुपत्थर में Reptiles, एम्फिबिया के विकास हैं। फिर जलवायु के आई, तने पर ग्लोसोपेट्रिस वनस्पति का विकास हुआ। उपरी गोण्डवाना में कोणधारी वनस्पति, मछली तथा अन्य रीढ़ वाले जीवों के विकास है। अन्त में सज्जमकाल में ज्वालामुखी क्रिया हुई।

→ विरण → प्रायद्वीपीय भारत में गोण्डवाना संस्तरी का निर्माण प्रायः प०-पू० मैल प्रशित द्रोणियों (दामोहर,

बराकद, महानदी, गोंडवरी, वधा, सान, ऊपरी नर्मदा आदि बाधियों में हुआ।

अन्ध्र राजमहल, रीता, कच्छ - काठियावाड़, पं० राजस्थान तथा हिमालय में इसके उप-उष्ण हैं। हिमालय में कलन के बाण परतदार गोंडवाना चट्टानें कुवाटजाइट, स्लेट आदि में परिवर्तित हो गई हैं जबकि प्रायः दीपीय भाग में रूपांतरण नहीं हुआ है।

— क्लीकैण → ब्लेण्डफोर्ड, C.S. FOX के अनुसार →

दिलोफाइलम कनस्पि युक्त उपरी गोंडवाना ऊम
 विषम किन्धास
 ग्लोसोवैरेस कनस्पि युक्त निम्न गोंडवाना ऊम

— डॉ० फ्रीस्ट्रॉमण्टन एवं रेडन बर्ग के अनुसार →

<u>Periods</u>	<u>Series</u>	<u>Stage</u>	<u>System</u>
निम्न क्रिटेसस	उमिया	उमिया	उपरी गोंडवाना
उपरी पुरैसिक	जखलपुर	जखलपुर	
निम्न पुरैसिक	जखलपुर	चौगान	
निम्न पुरैसिक	जखलपुर	कोरा	
उपरी ट्रिथेसिक	मन्दीरी	—	विषम किन्धास
उपरी ट्रिथेसिक	महादेव, पंचमदी	—	
निम्न ट्रिथेसिक	पंवेरा	—	विषम किन्धास निम्न गोंडवाना
उपरी परमियन	दाभुडा	रानीगंज	
मध्य परमियन	दाभुडा	Balran measure	
निम्न परमियन	दाभुडा	बराकद करहवाड़ी	

विषम विन्धास
 इपरी कार्बोनिफेरस - तालचीर - तालचीर
 इपरी कार्बोनिफेरस - तालचीर - बाइल्डर
 सल्टर
 निम्न
 गोण्डवाना
 विषम विन्धास

• निम्न गोण्डवाना —

(A) तालचीर विरिज → सबसे निचला इस विरिज का नाम इंडीया की तालचीर त्रैणी के नाम पर हुआ। इसमें लाइमाइट, बाइल्डर, इयशेल, कार्बोनिफेरस लिंकानीन लैंडी जलवायु के सूचक हैं।

(B) दामुडा विरिज → यह विषम विन्धास के साथ तालचीर विरिज के ऊपर है। यहाँ बालुकापत्थर, शैल, कोयला परते हैं।
 उपविभाग — (i) करहरवाड़ी स्टेज — यहाँ बालुकापत्थर, शैल - संल्टरों में कोयला है।

(ii) बपकर स्टेज — यह नरम बपकर बेसिन के नाम पर है। यहाँ बालुकापत्थर, कंक्रीमट, शैल, कोयला परते हैं।

(iii) Barren Measure → यहाँ बालुकापत्थर, Ironstone मिलते हैं।

(iv) रानीगंज स्टेज → इसमें बालुकापत्थर, शैल, कोयला - सल्टर हैं।

• मध्य गोण्डवाना कुम —

(i) पंचेत विरिज — पंचेत पहाड़ी - क्षेत्र में निचले भाग में बालुकापत्थर, शैल और ऊपर अथुड - पेलसपाट से युक्त बालुकापत्थर है।

(ii) मरादेल विरिज → यहाँ बालुकापत्थर के ऊपर और नीचे शैल - संल्टर हैं।

(iii) मलरी विरिज → आन्ध्र प्रदेश में मलरी क्षेत्र में है। यहाँ

मलमूत्रिका, बालुकापत्थर हैं।

• उपरी गोण्डवाना कुम्भ —

(i) राजमहन विरीज → यहाँ गीर्ष राजमहन और कुपर सौरा स्ट्रेज की चट्टानें हैं।

(ii) जलवायुद विरीज → यहाँ मूत्रिका, बालुकापत्थर, कार्बोशैल मौजूद हैं।

(iii) उमिया विरीज → गोण्डवाना कुम्भ के इस सबसे उपरी खंड में समुद्री जमावशेषों से युक्त खंड हैं। इसके द्वारा कच्छ में हैं।

समुद्रतटीय भागों में गोण्डवाना कुम्भ — उपरी गोण्डवाना कुम्भ गुजरात, डीसा, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु के तटीय क्षेत्रों में हैं।

आग्नेय उद्भवित → गोण्डवाना मौजूद क्षेत्रों में क्विल, डाइक के रूप में आग्नेय उद्भवित भी हैं।

— आर्थिक उपयोगिता — भारत के 98.5% मौजूद निम्न गोण्डवाना कुम्भ के दामुदा विरीज में पंजाब, मारखंड, झारखण्ड, M.P, आन्ध्रप्रदेश और तमिलनाडु में हैं। मौजूद के साथ fire clay हैं। जिसका उपयोग ताप-सह्य ईट और सेपारिड उपयोग में होता है।

Basson Measure के करिया निम्न स्ट्रेज का उपयोग बिरापुर, वर्नपुर, कुली के लौह-सम्पन्न उद्भवित में होता है। बिरापुर बालुकापत्थर का उपयोग इमारतों में होता है। अथवा बालुकापत्थर से भूवनेश्वर, पुरी के मन्दिर बने हैं। सिमागम में ही नहीं इस कुम्भ में गैला, शिशा, जस्ता, यूरेनियम, एण्टीमनी भी मिलते हैं।

औसतनाम के क्षेत्र

